

DPN 6123

Title: विभिन्न पूजा विधान (सिन्दूरार्चन विधि)
VIBHINNA PŪJĀ VIDHĀNA (SINDŪ RĀRCANA VIDHI)

Run. No. 6814

Cat. No.

Micro. No.

Subject पूजाविधि Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.-New. / Maith.-New. / New.-Nep. /

Size in cms. 22 x 8.5

Folios 34

Lines (in a page) 718 irregular

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor फणीन्द्र रत्न वज्राचार्य

Date: NS / SS / VS / KS 840

Ruler / place Phanindra Ratna Bayra -
charya.

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

* ॐ तमः श्री कोलास्यायै ॥ सिन्दूरार्चन विधिमाह ॥ आदौ सुगन्ध जलेन चन्द्रे शादयः स्नान
सन्ध्यादि पूर्वकं कृत्वा सूर्यादि देवता गुरुजनायार्घ्यं ददेत् ॥

इति मण्डलासन पूजाविधिः

इति कुम्भासन पूजाविधिः

इति षट् योगिनी पूजाविधिः

इति चतुःषष्टि योगिनी वलि पूजाविधिः ॥

इत्यष्ट शतशान पूजाविधिः

सिन्दुराचन विधि

१ पूजा रुद्र २
 १ पंचमालि १
 १ कलशान्व १
 १ बाधना १
 १ कंठाखला १
 १ कंठायासनायिका १
 १ शिखलखोना १
 १ अकलिय १
 १ लयाधमादया १
 १ लयाधनाकाय १

१ अर्घलयाल १
 १ यासाजनया १
 १ रुद्रगवाया ६
 १ धूपदहन १
 १ कटायाय १
 १ लंघन १
 १ पूजागुलि १
 १ आसनखदि १
 १ मधुलगक १२
 १ पंचदहायगाक १

१ दाककायकट १
 १ झाड़ुनागा १
 १ पञ्चयगाक १००
 १ कर्णयगाक १४
 १ पंचसूयका १
 १ कर्णसूयका १
 १ वक्रयगा १
 १ कीलनययि १०
 १ आगमकायागम १
 १ सिद्धलित्रहया २
 १ अर्द्धवात्रया १५ वध

१ वज्रजम १
 १ वतालाता १
 १ एकमख १
 १ खालयात १००
 १ खनयया १४
 १ खगुलिय २
 १ सिंधुगात्रा ४
 १ नकावदन १
 १ नयय १५
 १ आनयि १५
 १ वाकगान १
 १ नोयआखित १

१ सगमखलदक १
 १ यकागदका १
 १ धकिय १ मालक १
 १ लाहादि १
 १ वलिस १ यजावध १
 १ कीनादन १
 १ पञ्चवादि १
 १ नकायका १
 १ आदिसमय १
 १ दगुलिसमय १
 १ आयनि १२

५४१२३४५६७८९१०१११२१३१४१५१६१७१८१९२०२१२२२३२४२५२६२७२८२९३०३१३२३३३४३५३६३७३८३९४०४१४२४३४४४५४६४७४८४९५०५१५२५३५४५५५६५७५८५९६०६१६२६३६४६५६६६७६८६९७०७१७२७३७४७५७६७७७८७९८०८१८२८३८४८५८६८७८८८९९०९१९२९३९४९५९६९७९८९९

[illegible]

15

10

मावीहं १ रुद्र उं वज्रकाशीहं १ रुद्र ॥ ६ ॥ वायथादि उं वज्रवलाहीहं १ रुद्र उं वज्रसायिकहं १ रुद्र उं वज्रमा
 धावीहं १ रुद्र उं वज्रलीमवदनीहं १ रुद्र उं वज्रधायवहं १ रुद्र उं वज्रदीहं १ रुद्र उं विश्ववृषीहं १ रुद्र उं वज्रका
 लायनीहं १ रुद्र ॥ ७ ॥ यथिमादि उं वज्रवृषीहं १ रुद्र उं वज्रवृषीहं १ रुद्र उं वज्रवृषीहं १ रुद्र उं वज्रवृषीहं १ रुद्र उं वज्रवृषीहं १ रुद्र
 रुद्र उं वज्रवृषीहं १ रुद्र उं वज्रमायाहं १ रुद्र उं वज्रयमस्त्रीहं १ रुद्र उं वज्रनलाकीहं १ रुद्र ॥ ८ ॥ निमत्या ३
 दि उं वज्रयिनीहं १ रुद्र उं वज्रजालिनीहं १ रुद्र उं वज्रकुलीहं १ रुद्र उं वज्ररुववीहं १ रुद्र उं मामकीहं १ रुद्र
 उं लावनीहं १ रुद्र उं याधुवीहं १ रुद्र उं गावधीहं १ रुद्र ॥ ९ ॥ दक्षिणादि उं वज्रगुफालमहं १ रुद्र उं समथालमहं १
 रुद्र उं वज्रगजालमहं १ रुद्र उं वज्रबालमहं १ रुद्र उं वज्रबालमहं १ रुद्र उं विशालमहं १ रुद्र उं सिद्धालमहं १
 रुद्र उं रुद्रालमहं १ रुद्र ॥ १० ॥ अथादि उं कालालमहं १ रुद्र उं अमृतालमहं १ रुद्र उं काषालमहं १ रुद्र उं उदालमहं १

रुद्र उं रुद्राहं १ रुद्र उं वज्रवृषीहं १ रुद्र उं वज्रवाकसीहं १ रुद्र उं रुद्रवृषीहं १ रुद्र ॥ ६ ॥ अथादि उं वज्रवृषीहं १ रुद्र उं वज्रवृषीहं १ रुद्र
 ॥ ७ ॥ उं कालाकुलाय स्वाहा ॥ यथिमा ॥ उं कवक रुं व वाय स्वाहा ॥ दक्षिणा ॥ उं अद्रुद्रासाय स्वाहा ॥ अमृता ॥ उं
 लकीवनरुनासनाय स्वाहा ॥ निमत्या ॥ उं धावाधकालाय स्वाहा ॥ वायथा ॥ उं किलिकिनालवाय स्वाहा ॥
 रुद्रान ॥ ये वायदावयूजा ॥ लास्या ॥ र्धेनवादन ॥ रुद्रि ॥ मरुतये ॥ रुद्रि ॥ निमृतासनाय स्वाहा ॥ विधि ॥
 ॥ ७ ॥ गत्याद्वि ॥ रुद्रासने रुद्रनासदलकमसं मध्या अमृताय निमृताय वायथा रुद्राने कालिखः
 रुद्रासदयविहावना ॥ अथा यथायास ॥ उं रुद्रमहामध्यामवदनम ॥ मध्या ॥ उं धीरुगयीनयनम ॥
 ॥ यथे ॥ उं धाडियानयीनयनम ॥ ७ ॥ उं जालंधवयीनयनम ॥ यथिमा ॥ उं यन्निवयीनः
 यनम ॥ दक्षिणा ॥ उं निमृतावकायनम ॥ अमृता ॥ उं धर्मवकायनम ॥ निमृता ॥ उं सीतागव
 कायनम ॥ वायथा ॥ उं महामुखवकायनम ॥ रुद्रान ॥ र्धेनवा रुद्रि ॥ मरुतये ॥ रुद्रि ॥

5

रासनयूजाविधिः॥ • ॥ अथ अमलमधुनयथोक्तमसिद्धयवा मद्रुनयद्रुकोतिवि
 वा मधुदिवकायसकयगनिवीजमकुठानासंकुशो॥ डीं डीं डीं सवेव द्रुजकिनी यथापि
 ॥ मधु॥ डीं वं वां कूं हूं रुद्र स्वाहा॥ पूजाय॥ डीं हां थों यो कूं हूं रुद्र स्वाहा॥ पूजा नाय॥ डीं डीं मां मां कूं
 हूं रुद्र स्वाहा॥ वायवाय॥ डीं डीं ४ सं कूं हूं रुद्र स्वाहा॥ यथिमाय॥ डीं हूं हूं सं कूं हूं रुद्र स्वाहा॥
 नमो स्वाहा॥ डीं रुद्र रुद्र वं कूं हूं रुद्र स्वाहा॥ अथ॥ गगन ४ य दया गिनी पूजय॥ गीग यथा गिनी
 ॥ रायना॥ वावाही वक्रवधु निमरवा मूलमखर्वकं वामनीलं दक्षिणं देविनी॥ यद्रुजा वामकया
 लवदार्जया धाधवा दक्षिणं अर्जुन वक्रमधुवर्जं धवा॥ अग्निरुर्वणिना मकरकं दी दिगम्बरा
 यथि मद्रु रुद्रा सूर्ये पुरा सूर्ये मधुला जाली रासनसिद्धिः॥ यामिनी माहिनी संचालिनी संचालि

१ मोसथिवलिः

नी वक्रिका नील सित पीत द्रविण धूमवर्णैः। न कवका वक्र रुद्रा निनगायुह्यालीटा वासना
 गुजा वक्र पुरा मधुला नवैरुगरिगवनी म्रुवय॥ आ या य रं ला घी रुनि॥ वावाही यामिनी द
 वी माही संवालिनी धवी॥ गामिनी वक्रिका दवी नमामि य दया गिनी॥ मरु मय्येदा॥ यार्थं मद्रु मां सा
 दिशि ४ य विष्टु य मद्रुका वसमी य म्रु स्रु यय॥ ४ गि य दया गिनी पूजा विधिः॥ • ॥ गगन
 दि ४ धा नम मधु वलि राजने यथ यगा क क ध्रु यगा क नाना क स म य म्रु व वा स की स्रु रा व य स्रु य
 वीग रुलि निरु व ले क ह्य नाना वी दि नाना य धी विविध वधिव मल्ल मी स का दू क या य आ म्रु निरु
 लव द म धु वा दि व सा हा वा न यं वा न ग रु क रुद्र या य सा दि रि वा य य म्रु ला य वि स्रु यय॥
 गगनादि ४ य विधि कृत विष्टु की लना यथ कं य दक्षिणं ४ स्रु स्रु न य स्रु यय॥ की लना द

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

३४नी x

ॐ अ॥ ४॥ हं का व व धि ना ह्ना नमः नवसमानि य न के वं य व दाय ह्ना ॥ ॐ अमृतं अमृतं य व दाय ह्ना ॥ नः
ना वाम क बा ह्ना ह्ना लि स्यां को रु म द ध म्ना द याम रि लि स्या व न्ना य म्ना ॥ ॐ अमृतं अमृतं य व दाय ह्ना ॥
व न्ना ह्ना अमृतं य व दाय ४ जी ४ स्वादा ॥ अ॥ यो य य य यो म्ना ॥ ॐ अविदान न द ह्ना ह्ना रु द्वा ४ म्ना
न द दाय क म्ना य व य म्ना २ जी ४ स्वादा ॥ म॥ ॥ ॐ अ न द ह्ना रु द्वा ॥ य व ॥ ॐ य व मान न द ह्ना रु द्वा
॥ ॐ अ॥ ॐ अविमान न द ह्ना रु द्वा ॥ य व म्ना ॥ ॐ म द जान न द ह्ना रु द्वा ॥ द द्वा ॥ य ला य म्ना ॥ नि
४ स्वादा वं नि बाल म्ना स वं गृ यं नि बाल म्ना य य व म्ना म्ना क्वा धि वि लं न म्ना म्ना ॥ म द न य व दाय ॥
जा य ॥ ॐ हं हं हं हं हं स्वादा ॥ य व म्ना व लि ४ ॥ ॐ नि क रु य जा वि धि ४ ॥ ॐ ॥ न ना या य य काल य
ॐ अ॥ ४॥ हं मि नि म्ना ह्ना ॥ य न गृ यं य य य ॐ म द्वा ज क जा कि नी या जा धि वा म य ह्ना स्वादा नि म्ना ह्ना ॥ न

२५ जा ४ रुं दापेधिकाय सर्वेय क ताक प त्यादि x ॥ वाथको वनि x

गणपतमंडपाद्युक्तवध कहुं वं वीजमरुलिखरु॥ गणाय नमः॥ उं कां वज्रकपाटकी हं स्वादि निमरुद
 सफधा॥ उं वं जूं जिं रं हं॥ इति मरुदाय वं नमः॥ उं सवेदवगा विद्यामृगधाय स्वादि निमरुदाम
 योर्मयुवयने॥ गणाय नमः॥ गणाय नमः॥ उने विद्रुया गये॥ मध्याग्निकां विदलये श्री गददिष्ट
 द्योदिके यवतु द्वीयस्वयमद्वेवदु गिकां वरुस वरुय वरुयदिकुलिखरु सुयवि
 गधुर्वगसाय विद्या नमः॥ गीतकीं निरुअन॥ रावना॥ उं यमराजने
 नृगारावय॥ उटियाकावदकावजकाया लं नमः॥ मकावजं मामकिं व कामदहा सुजादि
 क्रि(द)कया लववदघु गताधजकलिहा कीं वा वा वरुधर्वा वामरुदक धनुश्याहा वदार्जक
 लहाधुवमंगलवीधा विद्रुगये धर्वा नवयोवनसम्यन्नासफा ककिवेदाय रमिदावागपिन

यनीदिवालीका वरु विगां वजयथे कीं मरुिगी रगावगी सुवसुदवी कवय॥ आ या य यं लाय
 मुनि॥ मरुगये धा॥ इति॥ नीलनीलजिनालारु अकायसंगमिनी॥ रुक्मां निमस्यामि अक
 था रुवमामकी॥ मरुगये धा॥ उं अ॥ १ हं हं रु॥ उं १ १ हं हं रु॥ उं १ १ हं हं रु॥ उं १ १ हं हं रु॥ उं १ १ हं हं रु॥
 उं १ १ हं हं रु॥ उं १ १ हं हं रु॥ उं १ १ हं हं रु॥ उं १ १ हं हं रु॥ उं १ १ हं हं रु॥ उं १ १ हं हं रु॥
 ॥ ० ॥ गदनरुसुयुजाका वय॥ दकिं दको वगलं वका वदननये दको लिखराय नमः
 वकथाया उं धी वजहं ववक हं हं रु॥ जाकिनी जालम सुवखादा॥ म॥ उं १ १ हं हं रु॥ वजसखा
 य॥ १ हं हं रु॥ स्वादा॥ य॥ उं १ १ हं हं रु॥ वनाय॥ १ हं हं रु॥ स्वादा॥ अ॥ उं १ १ हं हं रु॥ स्वादा॥
 य॥ नरुसुयुजा॥ १ हं हं रु॥ स्वादा॥ नमः॥ उं १ १ हं हं रु॥ वजसखाय॥ १ हं हं रु॥ स्वादा॥ यः

70

कृत्विद्यादि॥ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥ यं लाघं सुनिर्मलं तथैव॥ॐ
निवृत्तं यद्विद्यानिनीवलियुजाविधि॥॥ अथ श्रीमद्भगवत्पूजाविधिः॥ गी॥
कृत्वा वसुदेवाय॥ शिवना॥ पूर्वोक्तं वक्रादी यीर्णा॥ अ॥ कावरीजं॥ का॥ क॥ यीर्णा॥ अ॥ मि
ना॥ क॥ रु॥ व॥ य॥॥ ना॥ ग॥ क॥ का॥ व॥ क॥॥ म॥ हा॥ य॥ अ॥ ना॥ ग॥ यी॥ र्णा॥॥ व॥ ॐ॥ अ॥ नाम॥ भ॥ भ॥ न॥ र्णा॥ व॥
य॥॥ व॥ लि॥ न॥ धि॥ व॥॥ वि॥ क्र॥ य॥ य॥ य॥ ना॥ का॥ व॥ ल्य॥ य॥ वि॥ स॥ स्म॥ य॥ य॥ उ॥ य॥॥ॐ॥ क॥ ॐ॥ ह॥ र॥
य॥ अ॥ ग॥ स्य॥ वि॥ घ्ना॥ भ॥ य॥ रू॥ द्वा॥ दा॥॥ॐ॥ नि॥ क॥ र॥ य॥ ल॥ स्य॥॥ॐ॥ ग॥ ग॥ द॥ य॥ ग॥ य॥ न॥ म॥
दा॥॥ॐ॥ नि॥ वि॥ ना॥ य॥ क॥ स्य॥॥ॐ॥ स्म॥ दा॥ य॥ न॥ म॥
दा॥॥ॐ॥ नि॥ क॥ म॥ ल॥ स्य॥॥ॐ॥ म॥ दा॥ का॥
ला॥ य॥ न॥ म॥
दा॥॥ॐ॥ नि॥ म॥ दा॥ का॥ ल॥ स्य॥॥ॐ॥ अ॥ व॥ क्रा॥ दी॥ व॥ क्रा॥ दी॥ व॥ क्रा॥ ला॥ क॥ म॥ व॥

15

6/1
68

ॐ नमो महालक्ष्मी सिंगी ॥ ४ ॥ काववीडी ॥ श्री यद्येव वं घिनीली च विगुर्गुणी महद्वर्ग
 (धर्मी वटवर्ग) ॥ गुरु कनागं वकी ॥ किलिकि बालवर्गनामममममनरावयशोवलि
 सर्ववर्ग ॥ ४ ॥ ॐ कांठी ॥ हं ४ ॥ वविगायविप्रनामय रूद्र स्वाहा ॥ कृणुयालस्या ॥ ग
 (होम) दियुववर्ग ॥ ४ ॥ ॐ ४ ॥ महालक्ष्मी सुवला कमवर्ग ॥ २ ॥ ॐ हं ४ ॥ रूद्र स्वाहा ॥ अ
 वाहन ॥ ४ ॥ हं ४ ॥ महालक्ष्मी नमः ४ स्वाहा ॥ मूलस्या ॥ ४ ॥ हं ४ ॥ अथ व (हं) स्वाहा ॥ ४ ॥ व
 या ॥ यववेदलि ॥ ४ ॥ यला य मी ॥ महालक्ष्मी सिंगवर्ग ॥ यो गविन्द विधाविधी
 नानावत्त विरूपाक्षी नमामि सिंदुवादिनी ॥ ४ ॥ ययववर्ग ॥ ४ ॥ ॐ ॥ मुनि ॥ अथ
 कृणुहि गोदयी अथ वरुनिवाहिनी ॥ अथ वरु वसंयूट अथ माठुनमा मुनी ॥

२२

१०

२३

२५

अथ नागनदी क्षेत्र अथ मद्यकुज कव ४ ॥ अथ सिद्धाष्ट लिङ्ग ४ ॥ रूद्राधुनाष्टाकि
 नी ॥ अथ दिगं धर्मादवी ॥ अथ वेवहावालय ॥ ४ ॥ ॐ ४ ॥ दाया विनामय अथ वरुनिमा
 मुनी ॥ जायम ४ ॥ ॐ ४ ॥ कवट गयय ४ ॥ ॐ ४ ॥ नमः ४ स्वाहा ॥ यधर्मा ४ ॥ ॐ ४ ॥ कावा
 मस्वसर्वधर्मा ४ ॥ मायनत्यत्रत्वा ४ ॐ ४ ॥ ॐ ४ ॥ हं ४ ॥ रूद्र स्वाहा ॥ ४ ॥ निमकुटावलि
 दद्यात् ॥ ४ ॥ ॐ ४ ॥ यथ ४ ॥ ममानयुजाविधि ४ ॥ ॥ गदनवक सूरुटाकल ४ ॥ दिम
 हुल ४ ॐ ४ ॥ वज्रवध्वं हं स्वाहा निमकुटावयय ४ ॥ अथादिसमय कर्तुं संयुक्तमादनी
 साधय ॥ यनमहुलमध्यासिद्वर्गसंस्तुयमूलमकुटा ४ ॥ निमकुटावयवगादिक ४
 उयहाकय ॥ गजादिसमय अहय ॥ विष्टि ४ ॥ ॐ ४ ॥ हि अथर्मा नदि संरावनम

5

10

15

20

103
203

1130/1156

लीनहिन्दुवनयात्माकान्तासर्वकथागणगुणगलान्वावाच्यार्थगुणः श्रीवज्रसननामस्तुति
कनाश्रीसारदायगदशास्त्रस्यैववदनादशास्त्रीसत्साधनकल्याणानावाच्युक्तकथागणदिनव
नादहंतथाकथक॥ ७ ॥

15

१३३

१३४

१०

हं हीन क स न वा यः न म शा आ दो स्त य श न् द व स न् द न दिय ति मा क म श आ चो र्क
 या दा घ क्र या त् ॥ गु व म लु ल यं क ग व ॥ सिं ध न् मा हा धि र् आ दि यु डा ॥ ल दि य
 थं का दि म लु ल थ ल वि म कू न ना न क्ता य क गृ ठ का या थ न न दि न म स्का च ॥ मि स ध
 मा धि ॥ ह य न् क रु यु डा व लि दा न् यु डा य न न द व ना थ न म लु ल स थं क ग व न हा
 य च ठ ह ल स च ठ का न सां स्ता न न र्थ श व ना धू य घ टि का दि रि नृ ल गी त व द न
 म य ठ मि ॥ सं यु क्त ह रु न सं स्त ह म लु ला धि य ति सा ध न् अ क्ता ह र्ग ड थ न् स क

५

हं न म ४ वी य द नृ ल ध वा य ॥ २ ॥ न स्य व द्मा लु र्ध्वं ग रु व दि हा धि र् लु ला व का भ व रु र्ज ४ श य
 दि व क वा र्ध प रु ति रु ग ग ना थु क्का का हा ल र्ध ॥ म कू ह ल र्ध वृ द्वा च नि स वि स्म वि स्मा ग व क
 धु व द्वा ॥ रु स्ता रु क य या ट व व रु रु ग व क ४ य द न रु र्ध्व र स्या ॥ अ धि व ॥ या सा स सा व व क वि व र
 य कि म न मा स कि या ग म रु का ४ सा धी र्थ स्य य सा दा वि हा कि नि रु रु वं स्ता मि ना नि थ य व ४ ग व
 य त्या स वि र्धं स मू द य कि स र्ध्वं क ल्य ना जाल मू कं क थो रु स्या धि य द्रां धि व सि व वि न र्थ म रु व
 स र्ध्वं का र्थ ॥ अ धि व ॥ य त्या चै रु रु का टि वि ट क य द्र ष नृ त्या स र्ध्वं य थ क स धू यान व क रु या धि
 नि रु वि दि र्थि या मी ह न व वा य वा वा ध न क वि कि त्र स्य वि स्ता र्धं य थ क मू नि रु ४ स्या रु रु

0 5 10 15 20

790

[illegible]

15

१४१

२

१९१

१०

कजाकिनीययतीरुधर्मवर्तिगृह २५५ स्वादा ॥ मध्या ॥ इंदवज्जकजाकिनीययादिना ॥ य
 ॥ इंदवज्जकजाकिनीययादिना ॥ डल ॥ इयमज्जकजाकिनीययादि ॥ यधिसा ॥ इंकर्मज
 कजाकिनीययादि ॥ दकि ॥ यला ॥ यलुगि मरु ॥ यागलवजाय ॥ मुननजययादाव खवया
 नहामबा ॥ खाजनेनाकनवालाव ॥ मलनधाव ॥ १०८ दय ॥ कला ॥ गीगदाव ॥ बागनाति ॥
 गावसा ॥ ० ॥ काला ॥ धियावाला ॥ धियादि ॥ थनमूलावा ॥ यो ॥ यददा ॥ वेध्यानलनया
 लाहाथनकायाव ॥ थमसावका ॥ डावाव ॥ मसी ॥ आली ॥ दयदकासी ॥ डावाव ॥ खसिवाक्य
 उयावनिमिलिकायाव ॥ थमसावका ॥ दय ॥ थलि ॥ जेमु ॥ आदिन ॥ य ॥ इममस ॥ यथा ॥ मजागा
 थंदय ॥ थन ॥ वाया ॥ मथनस्य ॥ मरु ॥ कतया ॥ वाजला ॥ मसी ॥ विवन ॥ आदि ॥ निविय ॥ यान ॥ मोठ ॥ मथियथन
 यिवमलिरु ॥ कदा ॥ थलि ॥ मगुल ॥ थल ॥ खानगान ॥ मरु ॥ इति ॥ मया ॥ वका ॥ डावा ॥ निविमज्जन ॥ इति ॥ निविमज्ज

॥ १४१ ॥

५

॥ मुनं मगुलधनदावया ॥ थवक ॥ मडा ॥ मस्वान ॥ दान ॥ गनीला ॥ कीनय ॥ वसय ॥ दान ॥ युगा ॥ मडा ॥ नगिय ॥ धिगिरुधन २
 मडा ॥ नगिय ॥ धनकाव ॥ सिधुग ॥ आदि ॥ मसाधि ॥ थलि ॥ कील ॥ नरावना ॥ काल ॥ नगाय ॥ द ॥ व ॥ गा ॥ स्वा ॥ न ॥ न ॥ व ॥ र्क ॥ न ॥ र
 कदा ॥ गीत ॥ विव ॥ न ॥ मूल ॥ थवि ॥ विद ॥ डा ॥ क ॥ मगीत ॥ न ॥ मरु ॥ का ॥ न ॥ व ॥ म ॥ दा ॥ वा ॥ र ॥ गीत ॥ यु ॥ नि ॥ न ॥ डा ॥ न ॥ दि ॥ ग ॥ द
 य ॥ थवि ॥ वि ॥ गीत ॥ वि ॥ व ॥ क ॥ मूल ॥ धन ॥ वि ॥ वा ॥ गीत ॥ दा ॥ उ ॥ आ ॥ र ॥ व ॥ द ॥ उ ॥ या ॥ ध ॥ ॥ न ॥ थवि ॥ वि ॥ यु ॥ र्ध ॥ गी ॥ त ॥ ध ॥ न ॥ २ ॥ थ ॥ न ॥ वि ॥
 द ॥ कि ॥ द ॥ गी ॥ त ॥ द ॥ द ॥ द ॥ द ॥ व ॥ ॥ थन ॥ वा ॥ य ॥ थि ॥ मगीत ॥ क ॥ लि ॥ न ॥ व ॥ जा ॥ न ॥ व ॥ थवि ॥ वि ॥ गीत ॥ नि ॥ न ॥ डा ॥ न ॥ ड ॥ क ॥ न ॥ य ॥ ल ॥ क ॥ ॥ व
 ॥ वि ॥ व ॥ न ॥ गी ॥ त ॥ मूल ॥ ॥ र ॥ न ॥ नी ॥ ल ॥ गे ॥ न ॥ दि ॥ ग ॥ क ॥ म ॥ वि ॥ द ॥ डा ॥ मूल ॥ ॥ न ॥ म ॥ द ॥ का ॥ न ॥ य ॥ र्ध ॥ न ॥ म ॥ दा ॥ वा ॥ र ॥ उ ॥ या ॥ ध ॥ ॥ थ ॥ न
 वि ॥ व ॥ स्वा ॥ न ॥ त ॥ न ॥ द ॥ कि ॥ द ॥ ॥ आ ॥ गी ॥ र्ध ॥ द ॥ ॥ ग ॥ द ॥ व ॥ क ॥ ग ॥ था ॥ सा ॥ वि ॥ र ॥ क ॥ द ॥ गी ॥ त ॥ का ॥ ना ॥ यि ॥ न ॥ सा ॥ वि ॥ व ॥ दि ॥ य ॥ न ॥ थ ॥ नी ॥ त ॥ गी ॥ त
 वि ॥ व ॥ क ॥ मूल ॥ ॥ गी ॥ त ॥ दा ॥ डा ॥ र ॥ व ॥ द ॥ क ॥ मी ॥ ॥ गी ॥ त ॥ ध ॥ न ॥ २ ॥ यु ॥ र्ध ॥ ॥ गी ॥ त ॥ द ॥ द ॥ द ॥ द ॥ व ॥ द ॥ कि ॥ द ॥ ॥ गी ॥ त ॥ द ॥ ली ॥ न ॥ व ॥ जा ॥ न ॥ व ॥ य ॥ थि

5

10

15

20

म॥गीतगिनडात्रउव॥गीतउदिता॥उयाधम॥विप्रवद्यागधवक॥गागीनीवृथामूदावड्यागिता
भवयाजाकासूडासदिननमात्ररुसक्यासिवसकिस॥संवत्८४०॥गुरु॥

१४३

१९३

१॥उं नमो गवर्गवनावनपुरुवागाय तथगगायादकर्मस्यकर्मवृद्धाय॥नद्यथा॥उं मुक्ता २सम २समय २
आर्क २दार्क २समाजाय अनाल म्भ न जलम्वय (अवनि मरुत गं निलोक ल निर्वीणसर्ववृद्ध विद्याना धिष्ठित स्वादा॥
२॥उं नमो गवर्ग अकोर्याय तथ गगायादकर्मस्यकर्मवृद्धाय॥नद्यथा॥उं कर्क नि रवाक नि रवा
ज नि रवाठ नि रसंता मिनि २यु ति दन २सर्व कर्माय नैव ना सिखादा॥ २॥उं नमो गवर्ग वलक
पुनाजाय तथ गगायादकर्मस्यकर्मवृद्धाय॥नद्यथा॥उं वल २महावल २वल सक्त वस्वादा॥ ३॥
३॥उं नमो गवर्ग अमिना रतथ गगायादकर्मस्यकर्मवृद्धाय नद्यथा॥उं अमृ २अमिना रुव अ
मृ न सीरुव अमृ मि सिद्धि अमि न गं अमृ न वि काने अमि न गं मि न अमृ न गगन कैलिके य अ
मि न इन्द्र रिख य सवार्थ साधन सर्व कर्म कर्माय कर्माय स्वादा॥ ४॥उं नमो गवर्ग अमाय
मिद्धि य तथ गगायादकर्मस्यकर्मवृद्धाय नद्यथा॥उं सिद्ध स सिद्ध य नम सिद्ध सर्व सिद्ध स्वादा॥ ५॥
५॥गिव कर्तुं तथ गगध वनि॥

१०५

[illegible]

78/5
195

[illegible]

۶۹۹

२३१५

15

१४८

१३२

१०

५

२ कुरुन सिंधु मू६५

पुष्पराऊन हवालवलि कवनेवश वकविक्रवाया वाकलठ रुदकलठ नागध मयुदा श्रील क्री
 यकिदीयक दहावलिसमस्त यथाविधि थरु यनधूनठाव रुनाय अलिनी कायकक्षय लीमा
 स्यंद काय थाससमाने ॥ थलिसूयोद्यविय मूलावाये आदिर्नवाय थनयल लुलामन आमन
 खदिलास्य थिनयाद विज्ञाय यज्ञोरुन वस्तु यनिलर कक्षायमा लज्जुलि उदा र्जगुलि लंवल
 लंखिल यवनि ककुल वडा नि यद्रका वडु र्द्य ० धिर्वमव क्रानि के गु आदिन समस्त मूलावा
 ये आदिन क्रियास गलकस्तिलवजाय ॥ ॥ थन पुष्पराऊन कथ गुनमधुल यत्र ३ गथ सोधन
 यादविय सिंधु अथयथा विसर्जन वलिष्ठय ॥ निमसाधियाद वलिपूजा ॥ थन कलठा रावना
 वक कलठामूलावायेन यज्ञा मधुलमवाया कलठ कमावायेन यज्ञा यथाविधि थरुना ॥ थन अग्नि क
 दु (६) धन धर्मे लंवन दायम रु ४६ डं र्जं र्जं ॥ वडा धाथियम रु ४६ डं मदनीव जिहिरुव वडा वधरु

१४५

१ पूजा रुदल थि ५५ मू६५ पायलि ५

०

५

१०

१५

२०

15

151

॥ इति वादप्रविष्टानमकुशुडं वज्रसत्त्वआ॥ वाव॥ कदाप्यन कामसिर्गन॥ यं लाघं मुनिर्गद्ये॥ अथ
 लिङ्गप्रियाय सूर्यगुक्तिमि अथवा दवया कश्चयर्कग्यामटर्कव वाक्कदाया कनयामटर्कव अथ
 टदिडलिशाय छिजलवागामेधलद्यायन थदावदिवाक ध्वलभास्यदयावमूलावाथेयाऊव
 सकलानकुशलर्क॥ रावना॥ धूय निलाऊन लादागिबका यं लाघं मुनि॥ थनर्लिंश्ववलासवा
 वर्यअग्निस्त्रयनयाय धेमट छिजलस्रगदजादमूलावाथेवयर्ददाव आलीहयदन वास्यस्वकिवा २
 कयदयं अग्निष्ठावर्नयनी दुखादा॥ थनययकालदेकसा मिरयावलसलायर्कवकालकाय वाअ
 थानका अग्निरावनायउध॥ आकयेदा निलाऊन यायादि यं लाघं मुनि॥ धल छिलथि वीदिदयः
 अग्नाकुनिविय॥ ॥ अथलियवादादवयूजा मुजागथदवका कुनि यथमोययर्कनयाय॥ मधुल
 यूजाविधिथ कमावायनयाय॥ थनिधनदाव कमावाययनिकुमवन नूवाऊनसदिगर्नवन लिदा
 ८ छिजलनवलिसवनूजाथय॥

वदनजम

40

5

लसास्यदकाय॥

वयावयुरुमधुलदूर्यदिगयूजायाय दिगविदिगअवडुद्धयूजा यरुसालाददास्यधवथायसंवा
 न॥ थनरुलदवया क्रियाया रुद गलक्रयरुडवसा क्रयानिवाथयाव दहाक्रियायाय क्रियानिन
 अग्निरावनायउध छिलथि वीदिदय अकुनिविय छिजलसवावस यवाक रायदासु कस्मिहाव
 लसादद धलनवालाव छिधनयाय यनिष्ठायादाक्कदवयामूलमकुदा अकुनिइयइवा जिधव
 वनमुर्न वयर्ददाव दृगाकुनिविय॥ ॥ थनदहावलिविय अउधयउउथयने नेसाक दिद
 द्दवयल थथदावर्क यागीदाक्क आस धाननकुठक वलिमलदेवठलय रावनाया रु यं लाघं मु
 नि॥ अउधवलवजाय गीगअरुक्रुगयालहाल्य वलिमालादक्कयउययं लाघं मुनि॥ ॥ मधुलथ
 लकलानगान यूधुइऊययाय छिलथि वीदिदय उमलसआदिनसजागाथयूधुयाय दृगाकु
 निअदवा लकस्यविय आधीवाद मधुलविसऊने मधुदार्क दकदायूजा कनालअरुसविय॥ द

15

११२

धवलिविसर्जनया रुद्राय। यलहाय धालवलिदक्षायी ० सञ्जय ॥ धन। कीलजा यावदप्रविददुध
 लहाखेत्रयकवानकाययक यावदधनकाव लानसा आकृतिनाय जालकि नहाल स्वजाललो
 रकियायमाल ॥ धुकिदिनयाकि या लोकिकयक्षाय ॥ ७ ॥ धनवाजियाकिया नहालवियठुन
 रुद्रयउयद वीदिदावड धर्मसवावसहाय हिसुथि पूष्पुश पूजा रुवम कखान वगसिध धूनि ऊज
 मडधर्मसाज मधुलेयागाड रुवगवलिकटिन वाट धोने के कवेनेवडा वनेवडा कवने यक्षयगाः २
 यक्षी वा स्वागमास वलिसनस्य थाउया ॥ ८ ॥ वाय गुन मधुल सिधुन आदिसमय मधुलथेलक विस
 र्जन लखवलिष्ठया गालकाय नदिनमस्काय काय जिसमाधिया रुद्र कलहायूजायाय अग्निष्ठ
 पनप्रमोदगिविय कुरुयूजा दवयूजादवगाकृति यधमोययेकनी ॥ धन आकृतिधाव १० यायय
 वाक रुद्रमधुलकस्ति सादद साखल नेलाक थं थुन नवालावइय दृगाकृतिनाय ॥ धनय ३
 १ मूलावार्य यक्षुयाय मूलाधनिय

१०

5

धावा यथ कुरुक्षेत्र यन कनस्यीन ॥ धनयूजा र्य ला र्य मुक्ति ॥ धनयागिनी कर्ज सिधुय वागा
 कक्षुय गाका यक्षमदानगीयक नकमस्व अऊन काषाग थं थका कन गुनस्य याधया रुज
 यनस्वानन दूचके ॥ मुक्ति जाकि या यषनी लयादि ॥ धनदिगवलिविया रावना वलिस र्य
 ला र्य मुक्ति ॥ ९ ॥ वृद्धाकिनी यगीक्षु धर्मवलिरुद्र ॥ मध्य ॥ ९ ॥ वृद्धाकजाकिनी लयादि यक्ष ॥
 ९ ॥ कर्मजाकजाकिनी लयादि ॥ १० ॥ ९ ॥ यक्षजाकजाकिनी लयादि यक्षिमा ॥ ९ ॥ वृद्धाकजाकिनी लयादि
 ॥ दक्षिण ॥ धमरुद्रवलिविया र्य ला र्य मुक्ति ॥ पूष्पुश जययाद ॥ धन याग लवकाय गुननज
 वयानजययाय स्वययानमसिमूलमकुददया ॥ गीत कोला ॥ धन रुन रुमलस आदिनयथाः
 मुजागा थं दय धनहा वायागस थनस्य वृक्षक ललाहागस्य स्वययान आकृतिविय ॥ ११ ॥ वाधमा
 उमथियक धनयथ ॥ ११ ॥ लिरु रुद्र ॥ धनहाव मधुलथेलक खानगान पूष्पुयाय आधीयाद।

मधुलविमर्जनं मधुधानं दक्षयुजा समयावक ॥ ध्यायान्ति सदा त्रयाग्निनीविमर्जनं यदा
गनधिया वलिष्ठयं धानसायात्र रुद्रमदकं श्रुया ॥ धनसमयावकं गीतममालं कलंककं च ॥
यमस्वधुम् ॥ धुनिनागिया क्रिया लोकारुद्रयं धुधाय वज्रयं धुममालं यदा जितमनूधमकवी
दिदयं आकृतिवियं स्ववलानशला ॥ ७ ॥ धुधययं कृकृयं धामजागार्थं क्रियां कृस्यं ददवः
युजादवनाकृति ययं कनधूनकाव कर्मोवायं ययं विवर्तनं दिगयुजा धूनकाव ॥ कूलदवयः ४
निष्ठा रावनाया रुद्रं शिंघ्रं वलासवावकं श्रुति क्रिया कूलदवलेयं कसूकानयिष्यं काग्वः
नायजं कसूकानमाला वज्रमदिगनकाव जययायधाम १०८ पणिष्ठा मरुदाश्रया मरुदाश्र
ययं धर्मो गधानं मूलावायं मकटनयस्यं वज्रयदनवनं स्नानमाला दवया दिनसर्ग ॥ धिनिदाव
यविया गयुजा श्रुतं यजा यनाको श्रुय आकृतिवियं धनययं धामायाग्निं कृजं सिधुं श्रुयं जूतः

ययुजं लवकायं मरुदं वलिमलायकं वलिमालादकं यदयं यं लायं श्रुति ॥ धं लिधि ध्याधिवासनं धिधा
कृगियायमरु ॥ ध्याजकायं यस्वादा ॥ धुनाकृति धुवायागुदाधियक ॥ धननालिकालं लंसायं दकाय
मूलावायं याजवसर्ग स्नानं कूलं कशावना धूय नीला ऊनया ययं ध्यास ययं शिधुं कवियं यं ला
यं श्रुति ॥ धुधुं जययायं यं काठिमधुलं थलकं स्नानं ननं क्रमायेन मयास्यं धिलुधि वादि मलेस
आदिनं धुधुं श्रुतं कया समसं दयं यं लायं श्रुति ॥ धनमूलावायं वयं उं दाव नालिकालं नया लादा थ
नकायाव धमसावकं जासाव अली रुयदनया दाव स्वस्ति वाक्यं दयं निमिहिकाया व धुधुं वः
धानं लं जययं नीलं स्वादा ॥ धमसावकं दयं धनीलं धुनाकृति अदुवा लं कस्यं यथा धुधुं लं कस्यं
दूय वरुदाकं समसं दयं धं लि धं काठि नाक आवायं धवक कजिगं रुठिलि बाजा युजायागं
धूनकं जाजमानया वसया लसधियकं कस्यं धाना कवधाम २ यदयं आधिवावियं गुनद कक्षयु
जा वरु आदिनयं धाक द कक्षदादावय धावाकृगियाय कलहाजाय मधुलाय मरुदाव कोमालीधु

आसमयावक मकूटयूजा गद्यवक (छाया च न) ॥ ४४ ॥ गिरिविधिः ॥ ७ ॥

११७
 (२) काङ्क्षी गिरि क्रिया विधि यत् ॥ न उयो ह्मिक न ताङ्क्षी को खनयता द्विद स पमान अग्नि कुभानिका यत् ॥ न जयिद व
 दुवान न यना जास विधि विद यत् ॥ अर्द्ध खान गिरि वा द्वि रा रा खान वा ॥ कुं उ स्यात् स र्वा वा अर्द्धा गोकला वा पुमानमाव
 दिका न भिद ॥ क र्वा वि न न ल खन न व दिका या अर्द्ध पमान व दि व दिका ॥ न ददि ४ र्द्ध न व न उ द या यथा (आ) रा कर्त्त
 या ॥ ॥ व ज अर्द्ध य नि स्या या ॥ क र्त्त म (य) रा स्या न व कं वि लिख्य न ल्म (य) व क र्त्तु वि क र्त्त जी दि ग्य र्द्ध व
 क्ता स्या दि वि क्ता नि लिख्य न ॥ व दि स्य व नि या गाल र्वा ॥ व का व ज न ल य प्प वि ग्य व क र्त्त स्य र्द्ध व क र्त्त न व
 व न्द व जाल र्वा य न ॥ न श्व क र्त्तु र्द्ध व स म र्द्ध स न ल ग द ग म य द्या क र्त्त न वा व का क र्त्त न्म क र्त्त यो ग ॥ न न ॥ क
 र्त्तु स्या ल्म क र्त्त व द्दी य ॥ व ज स र्वा ॥

[illegible]

उ ग म च की

१५५

27

[illegible]

5

10

15

20

१२२

3

[illegible]

[illegible]

मलयजं मलयं मलयं । कतसदजा (थ) वां वक्रादितथागता तां । हानमादायवाधिविर्वजं ४। यरूयासाई मील नंर
थगे । छीक्रियं संयागं कद्वनं । उरयमात्रतनवद्वनं । यवर्तनस्यर्गशदिलुमं । तस्यनयगं ४ सर्वथा पुकारागान
। ४०० धादीनीत्यर्थः ४। नयो (थ) नस्यार्थः । ताद्यं हनक वयनशी गकिनीवज. यजीन । धम्मादयधूर्तनमवडा समयगत
क्षमम्वितस्मृतयागत ४। रावतावकविलत । म्वितगात्या सवतसमिक्त मस्या नीतार्थः ॥ ५००० ॥ गुरु ॥
१०० नमः ४। वक्रसम्भवाय ॥ कोलगिज ०० गि । कोलगिज ०० गी ०। लालवाला बलाकयायांगी । मूमिनिमूमिनी
कुरुवाकाला नदमलकिनायागिनी ॥ नदवक्रयागिनी ययि पुष्पायायया यथायोगमधिनाज याकनेतर्ग मीनधगा
यक ॥ क्रियं नितमनू ४। दासमकु (१) कन (१) कल नया । किम ०० न तक्रियकवाजा कन ४। मयतामदन । मांल ००
धतसात्रिम ०० गि । सात्रियार्थः । रनूयवर्न । अंगर्गगवृत्तानीय । आवायनदिजं तयव सगवविषयायि । योनिः
०० पुवय्यत ०० यंनोवतसागार्थः । शास्त्रासामकु वक्रसागर्ग । नदवादे । मलयज ०० त्यादि ०० तिनया ४। स्मृदनि
नार्थः । कोलगीनमहासूयवजं । मूमिनिमूमिनीवर्ग । नतपुष्पायायवीन ककालीवर्ग । नयानाठ ४। क्रियो नधति

15

10

४। ऊउव। अंकारनादकृतिनया वधुत्यासरु गवत ४क वहा नरवतिक नृधया क नृधमृन नृय त्वा न र ग वत ४। कि
 रुतामा लिथि यव र ग वान। वल सा हृदि वृजादि गनस्य वधुत्या दोहा र कर्ण। मदन वा धिचिन्ता भना। को न जला मने
 नृनामिना वायु ४क स्य यव ४। १२ वधुत्या इक्ष्वा ललता ने सता गनी वायु ४। २३ उर्न न नृन स्या वचा न ४। वनु कामादि नृवधु
 लोपुशकु। विनम्र दम् जावने न गने। नता जीर्ण नृ ४। २४ नृम स सर्वा कीतस्य सावय के नृत्वा नायसा वधु लोपुशसा यथ
 ११३ हंतामा रं र कर्णं यं र वन नृगा र ग वत्सु र्न ग म नं ग न म हा ग म न वधु त्या ४। न दा व मे हा स र्वे क न स स्य व न स ४। गु
 लायु ला वि क ल्य ना नृ नृ द य ४। गुह्यो गुह्ये याल मे म लं च अलोपुश य वि भा धि ना स ना। उ म म दा स र्व गु गु ना
 १४३ गुन न दि व धा व कृ या ना य धां उ वं स व र त स्य द ह स्य व स्य व नृ स र्व य ला स स र्व थ का न धा न स व य व नृ ४। ति स वा क
 हि ४। वा य क थो ४। यु ह्ना या य या ना स सा न स म व स म हा स र्वा न र वा म य य न क नृ नृ व र्ण न। उ वं र ता या के द सा र्वा स र्वा र्क
 न ल स र्वा न स ति न डि नृ म ल्ख नी या नां। कृ गा न र्वा र्क न र व ति। कि नृ य नी गु ह्ना ना नृ द क नृ म नां। उ र्वा न दा र्क द य उ व ४। अ
 नृ व नी ना र्थ यो नृ की न या र्थ उ व क र्ण नृ क मा न धा नि य व क र्ण य या क मि ति। तथा व धा गु र्क क र्णि ग र्हा धि चिन्ता र्थ य दा
 या नृ ह। य र्क ना। क र्णि य र्क अ र्ण व र्क ल द न नृ व मि ति। न वा य न व नृ ध न र्क कि नृ वा क र्ण वि क ल्य ना ना य स र्द ज न र्क व ग मा
 य व य थ य द न म न र्क ना र्थ। न ता य जा स सा थ म हा म डा ति छि नि त्थ र्थ ४॥ ॥ ७ ॥

5

१ उं न म ४ जी व ज वा ना ही ॥ ॥ १ ग ग ना दि ॥ का ना ठ न थि या ध म्मा दा गृही ता अ वा ला वा
 धि चि र्क मृ म धि व कं का ला ना दि म धु ल य वा र्क ना न र द न क उ म नृ ध नि र्ण या ठि दा यि कृ त्वा म
 व न व र्ज सि स ह ज्ञा न द क नृ धा कि य अ ल्ख र ॥ व म म म् ०० ल ला ला। उ ल्य न वा धि चि र्क र व ॥
 ॥ म व य न। स प न वा धि चि र्क व ज। कं र नृ व ज मा न य ॥ डि डि म न दि ना व र्ज र्क। ना नृ
 स र्द धा उ कि ला व ॥ न दि मृ नृ। स र्ता ना। स्वा न यि। न व र्क ना ठ। म र्द। वा धि चि र्क वा न या दा म अ
 ना वि वा न या दा ॥ र द न र्वा ध न कालि न य मं ग या गि नी य न य र्द हित वा न इ द नृ अ र्क र्थ ति कृ ना

ॐ ह्रिया यत उ। भा वा ना सि तं ॥ पून वा त स त या उ।
 थ को त्रि न कि नी न ॥ ॐ स न न सि र ध न के द नू त्रि न पा व क
 नि स क न च्छु र द्वा य सि क क या क द द्वा ॥ लाय क का उ १०
 उ काय वी या नू वा क या य का द्वा य क द त्रि त्रि
 व्रि या का प न च्छु वा त य थ का त्रि न कि नी न सि धु द्वा य
 क थ ति धू न का उ। दू का पि का न ति य र भा ॥ ॥

(पु थ म च्छ मि त्रा जा नं ॥ द्वि ती यं न द नू द्वा वं ॥ ना सि
 का यां ह ति या क्रि ॥ य गु र्थ क र्म म व व ॥ प थ म द्वा द
 यं र धे व ॥ द र्मं जा न थ ॥ ष ष म ॥ स फ म ना रि स र
 तं ॥ ॐ द्वि जा न क थ ष म ॥ न व म पा द स र उ तं
 द म मं गी म स र वा ॥ पि लु दानं प्र दा त वं का य
 भू ति च्छु र उ ना ॥